# काशी में तानसेन-परम्परा

काशी संगीत सम्राट तानसेन एवं उस परम्परा के मुर्धन्य विद्वानों से किस प्रकार आत्मीय सम्बन्ध रहा, इ स विषय में उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित डॉ. सुशील कुमार चौबे द्वारा लिखित 'हमारा आधुनिक संगीत' ग्रन्थ के द्वितीय अध्याय में विस्तृत प्रकाश डाला गया है। कुछ विद्वानों के अनुसार तानसेन का जन्मस्थान बनारस है। यहीं इनका बचपन बीता और पालन-पोषण हुआ। इनके पिता मकरन्द कथक (कथावाचक) थे, जो यहाँ के मंदिरों में पौराणिक कथाओं-गाथाओं को सस्वर गाकर सुनाया करते थे। तानसेन का बचपन का नाम तन्ना मिश्र था। उनकी प्रखर प्रत्युत्पन्नमति से प्रभावित हो विलक्षण संगीतमनीषी स्वामी हरिदास ने अपना शिष्य बनाकर गान्धर्व संगीत शिक्षा प्रदान कर अद्वितीय संगीत-नक्षत्र के रूप में प्रकाशित किया। सूफीमत के विलक्षण फकी और ग्वालियर के सुविख्यात विद्वान् पीर मुहम्मद गौस से तानसेन को सूफीमत के सिद्धान्तों की आध्यात्मिक शिक्षा मिली। रीवाँ नरेश रामचन्द्र के प्रिय गायक तान सेन जब मुगल सम्राट अकबर के नवरत्न हुए, तो उनकी अनुपम गायकी से प्रभावित होकर सम्राट अकबर ने उन्हें 'मियाँ तानसेन' नाम दिया और मुगल दरबार में उन्हें विशेष आदर और सम्मान प्रदान किया। अकबर के बाद मुगल सम्राटों के राजदरबार में भी तानसेन की वंश एवं शिष्य-परम्परा के कलावन्तों का समुचित आदर एवं सम्मान अक्षण्ण बना रहा। तानसेन की सम्मानित शिष्य-परम्परा के उत्कृष्ट कलासाधकों का वाराणसी में आना-जाना लगा रहता था और वे सभी काशई को संगीत की केन्द्रीय-पुण्यभुमि समझते थे।

१८वीं शताब्दी के अन्त में शनैः शनैः मुगल सम्राज्य छिन्न-भिन्न होता जा रहा था, जिससे तानसेन-घराना तीन भागों में विभक्त हुआ। तानसेन के ज्येष्ठ पुत्र सूरतसेन का घराना जयपुर जा बसा। इस घराने में ध्रुपद एवं सितार दोनों के मान्य विद्वान थे। तानसेन के छोटे पुत्र बिलास खाँ और दामाद मिश्री सिंह का नैकट्य बराबर बना रहा। विलास खाँ घराने के संगीतज्ञ ध्रुपद की शुद्धबानी के विशेषज्ञ थे और वाद्यों में सुरसिंगार-रबाब-वादन में इन लोगों ने विशेष सुदक्षता प्राप्त की। मिश्री सिंह के वंशज वीणा और ध्रुपद की डागुर बानी और खण्डहार बानी में पारंगत थे। विलास खाँ के घराने में जाफर खाँ, प्यार खाँ, आसन खाँ तीनों भ्राता विशिष्ट प्रतिनिधि मान्य हुए, जो ध्रुपद गायकी के साथ-साथ रबाब बजाने में भी पूर्ण पटु थे। मिश्री सिंह की परम्परा में निर्मल शाह अपने युग के अद्वितीय वीणावादक हुए। इन दोनें घराने के प्रतिनिधियों ने दिल्ली के बजाय वाराणसी को अपना निवास-स्थान बनाया। ये सभी परिवार काशी के कबीरचौरा मुहल्ले में रहते थे। ये परिवार लखनऊ दरबार से भी सम्बन्धित रहे, लेकिन दशहरा आदि विशेष अवसरों पर साशी नरेश के विशेष आमंत्रण पर इनका काशी आना-जाना बराबर लगा रहता था। काशी में इन परिवारों को महाराज बनारस की और से निःशुल्क जमीन आदि भी प्राप्त थी।

जाफर खाँ अपने समय के अद्वितीय रबाब-वादक थे। आपका वाद्य भी अपनी बनावट में अनूठा था। कभी-कभी लखनऊ एवं बनारस राज-दरबार में जाफर खाँ निर्मल शाह के वाद्यों की वादन शैली का अपूर्व प्रदर्शन ईर्ष्या-द्वेष की व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठकर होता था, जिसमें सुधी-श्रोता सुध-बुध खोकर आप दोनों महान् कलाकारों की अनुपम साधना का रसस्वादन तन्मय होकर करते थे। जाफर खाँ ने सुरसिंगार नामक नवीन वाद्य का अविष्कार कर उसका प्रथम प्रदर्शन काशी नरेश महाराज उदितनारायण सिंह के दरबार में करके गुणग्राही काशी नरेश, अनुपम विद्वान्, वीणावादक निर्मल शाह और सारे उपस्थित सुधी संगीत प्रेमियों को प्रभावित कर अतिशय प्रशंसा प्राप्त की। जाफर खाँ के दूसरे भ्राता प्यार खआँ ने इस नवीन वाद्य के स्वरूप और वादन शैली में और भी परिष्कार परिमार्जन कर इस वाद्य को बजाने में विशेष सुदक्षता प्राप्त की और इस वाद्य के अनुपम वादक मान्य हुए। प्यार खाँ के लघु भ्राता बासत खाँ अपने समय के धरंधर ध्रुपद गायक और रबाबवादक थे, जिनकी देश व्यापी खायाति थी। संगीत शास्त्रों के गहन अध्ययन के लिए बासत खआँ ने काशी के मूर्धन्य संस्कृत विद्वानों की निकटता प्राप्त कर उनसे संस्कृत भाषा की विधिवत् शिक्षा ग्रहण की। आपकी अनुपम संगीत-साधना एवं शास्त्रों के गम्भीर ज्ञान से प्रभावित होकर कलकत्ता के राजा हरकुमार टैगोर की राज सभा ने 'संगीतनायक' की उपाधि से विभूषित कर सम्मान किया। सन् १८५७ ई. के गदर के पश्चात् लखनऊ दरबार के अन्त होने पर बासत खाँ अपने संगीत-प्रवीण दो पुत्रों अली मुहम्मद खाँ (सुर सिंगार वादक) और मुहम्मद अली (ध्रुपद गायक-रबाब

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वादक) के साथ गया में जाकर बस गये।

निर्मल शाह के निधन के बाद उनके भतीजे उमराव खाँ सर्वश्रेष्ठ बीनकार हुए। इन्होंने 'सुर-बहार' नाम का एक नवीन वाद्य आविष्कृत किया और इस वाद्य की विशिष्ट वादक तैयार किया। जाफर खाँ के पुत्र सादिक अली खआँ अपने लघुभ्राता मिसर अली खाँ के साथ काशी नरेश के दरबार में विशिष्ट कलावन्त नियुक्त हुए। सादिक अली खाँ रबाब और वीणा दोनों के ही कुशल वादक होने के साथ-साथ संगीत-शआस्त्रों के ज्ञाता। संस्कृत एवं फारसी भाषा के पारंगत भाषाविद्त थे। काशी के संस्कृत-विद्वानों से आपका आत्मीय निकट सम्बन्ध बना हुआ था, जिससे संगीत के प्राचीन संस्कृत ग्रंथ के आध्ययन में आपको सुगमता से इस उद्भट विद्वानों का सहयोग मिलता रहा। सादिक अली खआँ की वादनशैली में लड़ी-जोड़, लड़गुथाव का सुन्दर समन्वय था, जो अन्यों से आपको विशिष्ट बना देता थआ। वादन में तार-परन की पारंगतता में अच्छे-अच्छे परवावजवादक भी चकरा जाते थे। सादिक अली ने रबाब की शिक्षा केवल अपनी वंश परम्परा के भाइयों को ही दी, किन्तु ध्रुपद, सितार आदि वाद्यों की शिक्षा अनेक शिष्यों को दी, जिनमें सितार में प्रमुख-शिष्य बाजपेयी जी दो मिजराबों से वादन करने में अपने समय में अद्वितीय थे। वीणा वादन-क्षेत्र के उत्कृष्ट शिष्यों में महेश चन्द्र सरकार एवं काशी के मूर्धन्य घरानेदार गायक मिठाईलाल मिश्र आपके संगीत सखआ सरीखे थे। एक बार श्री रामकृष्ण परमहंस जब काशी तीर्थ की यात्रा पर आये थे, तो महेशचन्द्र सरकार की उदभुत वीणा सुनकर समाधि में प्रविष्ट हुए थे।

सादिक अली खआँ के मरणोपरान्त 'संगीतनायक' बासत अली खाँ के ज्येषठ पुत्र अली मुहम्मद खआँ काशी नरेश के प्रधान दरबारी संगीतज्ञ नियुक्त हुए। उस समय तक आपके पिता गया में दिवंगत हो चुके थे और अली मुहम्मद खाँ स्थायी रूप से काशी आ चुके थे। आप रामनगर दुर्ग के समीप ही रहते थे। आप अत्यन्त उदरमना कला साधक थे। घण्टों अपने शिष्यों के सम्मुख अपना वाद्य सुरसिंगार बजाया। रागों में नई-नई तानों को बगैर पुनरावृति के अनवरत साधिकार बजाते रहने में आपका विशेष महारत हासिल थी। आपने सुरसिंगार वाद्य में कुछ विशेष शिष्यों को तैयार किया, जिनमें श्री पन्नालाल जैन, वैद्य अर्जुनदास एवं गया प्रसाद मिश्र प्रमुख थे। सुरसिंगार वाद्य के आपके सबसे कुशर शिष्य जालन्धर-निवासी सैय्यद मीर नासिर खाँ थे। अली मुहम्मद खाँ ने ध्रुपद गायन, वीणा और सुरसिंगार की शिक्षा रापुर के सुप्रसिद्ध बीनकार वजीर खाँ को दी, जो आपकी कला साधना के आत्मीय प्रशंसक थे और बराबर आपसे मिलने वाराणसी आते रहते थे। बंगाल के ख्याति प्रापत् गायक हरिनारायण मुखर्जी एवं लब्धप्रतिष्ठ गायक एवं रईस ताराप्रसाद घोष अली सुहम्मद खाँ के प्रिय शिष्य थे, जिन्हें आपसे सैकड़ों ध्रुपदों और सरगमों तथा राग-रागनियों का विशाल भण्डार प्राप्त हुआ। श्री ताराप्रसाद घोष संगीत-जगत में अपना गुण ग्राहकता और दानशीलता के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध थे, जिन्होंने अली मुहम्मद खाँ की तन, मन, धन से सेवा करके संगीत की उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त की।

श्री अली मुहम्मद खाँ के छोटे भ्राता मुहम्मद अली, जो गया में रहते थे, अकसर अपने बड़े भाई से मिलने वाराणसी आया करते थे और आकर उनसे रबाब की शिक्षा प्राप्त करते थे। दोनों भ्राता अपनी विलक्षण संगीत प्रतिभा से विद्वानों को प्रभावित कर उनकी प्रशंसा प्राप्त करते थे। दोनें ही अपने युग में संगीत जगत् के अप्रतिम कलावन्त थे। अली मुहम्मद खाँ की मृत्यु के बाद उनकी जगह की पूर्ति नही की जा सकी। रामपुर और जयपुर में बस गये, जिससे इस घराने की ध्रुपद-परम्परा की वाराणसी से लोप होने लगा। इ स घराने की संगीत परम्परा के शिष्यों में हरिनारायण मुखर्जी ऐसे विलक्षण ध्रुपद गायक और मिठाईलाल मिश्र जैसे कुशल गायक बीनकार ही प्रकाश स्तम्भ की तरह नाद समुद्र के भीषण छपोड़ों में बच गये थे, जिन्होंने नाराणसी घराने की ध्रुपद परम्परा के गायकों, वादकों की संगीत कला का वैशिष्टमय-चमत्कार देखा सुना था। इस प्रकार सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में मात्र वाराणसी और रामपुर ही तानसेन-परम्परा के सेनिया घराने की संगीत-परम्परा के मुख्य केन्द्र थे।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.